International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 6; November 2017; Page No. 400-402

वैश्विक पर्यावरणीय संकट एवं गाँधीवादी विचारों की प्रासंगिकता

अमित कुमार सिंह
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
अद्यतन स्थिति में पर्यावरणीय अपदूषण मानवीय सभ्यता के समक्ष एक गम्भीर चुनौती है। यह मानवीय जीवन के समक्ष यक्ष प्रश्न उपस्थित कर रहा है। यह विकृतियों का समारंभ है। विकृतियों के मूल में जीवन शैली की भौतिक प्रकृति है यदि जीवन और विकास के मध्य सुसंगति नहीं होगी तो ऐसी स्थिति में भविष्य अत्यन्त भयावह होगा। गाँधी के विचार पर्यावरण के सन्दर्भ एवं परिप्रेक्ष्य में एक दूरसंवेदी अर्न्तदृष्टि है। इसका लक्ष्य भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों के मध्य गाँधीवादी विचारों की प्रासंगिकता को रेखांकित करना है।

मूल शब्द : वैश्विक पर्यावरणीय, प्रासंगिकता, गाँधीवादी विचारों, मानवीय जीवन

प्रस्तावना

विकास के मार्ग का चयन तो मुख्यतः विकासशील देशों की समस्या है, परन्तु विकास का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण पर पड़ता है, विकासशील तथा अल्पविकसित देशों के औद्योगीकरण के लिए और यहाँ की विशाल जनसंख्या की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरी हो जाता है, दूसरी ओर विकसित तथा औद्योगीकृत देशों में उपभोग का स्तर इतना ऊँचा है कि वहाँ की अपेक्षाकृत कम जनसंख्या के उपभोग के लिए भी प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया जाता है। दोनों स्थितियों विश्व के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है और समस्या उत्पन्न होती है। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण वैश्विक तापन और पर्यावरण ह्रास के प्रति चिंता बढ़ती ही जा रही है, परन्तु गाँधी जी ने बहुत पहले ही कहा था कि इस धरती के संसाधन सीमित हैं और एक न्याय संगत एवं संपोषित समाज व्यवस्था की स्थापना की आवश्यकता है। गाँधीजी ने मानवीय आवश्यकताओं, मांगों और लालच के प्रति अपने विचार प्रकट किए हैं, इसको अपनाकर पर्यावरणीय कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। 'अर्नी नीस' सुविचारित पारिस्थितिकी विचार के प्रवर्तक हैं, उन्होंने लिखा है कि ''गाँधीजी का आदर्श, उन कुछ आदर्शों में से एक है, जो पर्यावरण संतुलन को दर्शाता है, और उनके द्वारा पाश्चात्य संसार की भौतिक प्रचुरता और अपशिष्ट की आलोचना को पारिस्थितिकीय आन्दोलन से जुड़े नेताओं ने स्वीकार किया है।'' वर्तमान में रियो–डी–जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में घोषित 'एजेण्डा 21' सेक्शन–4, कुछ हद तक पर्यावरण पर गाँधीवादी विचारों को ही प्रदर्शित करता है।

गाँधी शाश्वत विचारों के प्रणेता हैं। गाँधी के विचारों में सत्य एवं सत्य के आचरण की प्रयोगिक उपस्थिति एवं प्रासंगिकता है। गाँधी के विचार नैसर्गिक संरेख में कार्य–कारण की समग्र व्याख्या करते हैं। गाँधी ने उन विचारों को अंगीकार किया जिनसे केवल व्यक्ति का ही नहीं प्रत्युति, समष्टि का भी कल्याण संभव होता है। गाँधी के विचारों को राष्ट्र की प्राचीरों की परिधि में समायोजित नहीं किया जा सकता है बल्कि यह सार्वत्रिक विचार है जो वैश्विक दृष्टि की अपेक्षा करते हैं। अतः गाँधीवाद केवल राजनीतिक विचारधारा तक सीमित दर्शन नहीं है बल्कि इसके विपरीत गाँधी अर्थ, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज, आध्यात्म, दर्शन, विकास की समग्र फलश्रुति है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित एवं विकासशील देशों ने अपनी भौतिक उपलब्धियों के माध्यम से पर्यावरण के समक्ष गम्भीर चुनौती प्रस्तुत की है। विश्व का पर्यावरण इस प्रकार असंतुलित हुआ है कि मावनीय जीवन धीरे–धीरे संक्रमण की ओर बढ़ रहा है। अलनीनों, लानीनों के प्रभाव ने मौसम चक्र को मानवीय जीवन के प्रतिकूल बना दिया है। विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। कृषि पर जनसंख्या का महत्तम भाग की आजीविका निर्भर करती है। विकासशील देशों के नागरिकों की क्रय शक्ति अपेक्षाकृत कमजोर है। इन देशों में आधारभूत संरचना का विकास नहीं हो पाया है। पर्यावरण संकट के फलस्वरूप कल्याणकारी बजट का अधिकाधिक भाग स्वास्थ्य आदि मदों में व्यय हो रहा है, जिसके मूल में पर्यावरण की समस्या है। भारत जैसे अधिकाधिक जनसंख्या वाले राज्य में मेट्रोपोलिटन सिटी में गम्भीर पर्यावरणीय संकट उपस्थित हो गया है। यहाँ पर्यावरण के अपदूषण का महत्तम स्तर देखने को मिलता है। पर्यावरण का प्रतिकूल प्रभाव प्रशासन एवं राजनीति पर पड़ता है लेकिन इस सन्दर्भ में यह कहना युक्तिसंगत होगा कि पर्यावरण का प्रश्न भारतीय राजनीति का मुद्दा नहीं बन पाया है। पर्यावरण के अर्थ एवं सन्दर्भ में प्रशासन को विशेष हस्तक्षेप करना पड़ रहा है। भारत में नदियों का प्रदूषण, पर्यावरण समस्या का ज्वलंत उदाहरण है। भारत के पहाड़ों का भूस्खलन, भारत के बृहत्तर क्षेत्र में सूखा तो इसके विपरीत किन्हीं–किन्हीं भू–क्षेत्रों में बाढ़ की भयावह विभिषिका, जन जीवन को गहरे रूप में प्रभावित कर रहा है। भारत के राजकोषीय बजट पर पर्यावरण का विशिष्ट प्रभाव पड़ रहा है। क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। कल्याणकारी बजट की कटौती करके पर्यावरण को संतुलित करने का प्रयास प्रशासन को करना पड़ता है।

गाँधी एक ऐसे चिंतक एवं विचारक हैं, जिनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य विचारों में प्रकृति के अनुक्रम में जीवन को अवधारित करने का एवं सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का सामर्थ्य है। गाँधीवादी विचार कार्य–कारण सम्बन्धों पर अवलंम्बित है, फलतः गाँधी के विचारों में एक नैसर्गिक गतिशीलता है। जिन विचारों में गतिशीलता एवं गत्यात्मक ऊर्जा होती है, वे विचार शाश्वत एवं सार्वत्रिक होते हुए प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की शक्ति रखते हैं, गाँधी की कुटीर उद्योग की अवधारणा, गाँधी की अहिंसा की अवधारणा, गौ वध निषेध एवं गौ संरक्षण, स्वच्छता एवं

आत्म स्वावलंबन का मार्ग पर्यावरण को संतुलित करने का सद्प्रयास है। गाँधी मूलतया नदियों पर बड़े–बड़े बैराज के विरोधी रहे हैं। गाँधी की दूर संवेदी अर्न्तदृष्टि सुदूर भविष्य की पर्यावरणीय संकट की संभावनाओं की खोज करने में सक्षम है।

गाँधी ने वर्षों पूर्व प्रकृति के अनुसार विकास के शत्रु की संकल्पना की अभिव्यक्त की थी, जो पर्यावरणीय संकट का सफल समाधान है। टिहरी बाँध, नर्मदा सागर बाँध के पर्यावरणीय असंतुलन ने अपने भयावह रूप का दिग्दर्शन करा दिया है। यदि भारत के पर्यावरणीय संकट का समाधान गाँधी के विचारों को अंगीकार करके किया जाय, तो पर्यावरण की भयावह एवं विनाशकारी उपस्थिति मानवता के लिए घनघोर संकट उत्पन्न नहीं करेगा।

गाँधीवादी विचारों में पर्यावरण के इन्हीं प्रश्नों का सहज, सरल प्रायोगिक समाधान निहित है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि गाँधी पर्यावरण संकट के महत्वपूर्ण बिन्दु को अपने चिंतन का केन्द्रीय विषयवस्तु बनाते हुए, इसका प्रायोगिक अनुप्रयोग स्वयं अपने जीवन में किया है। गाँधी के व्यवहारिक प्रयोग पर्यावरण सुरक्षा की राष्ट्रीय दीक्षा देते हैं। आज के सन्दर्भ में गाँधी जी की दो बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। ''हम जिस ढंग से चाहे प्रकृति के उपहारों का प्रयोग कर सकते हैं परन्तु प्रकृति के बही खाते में लेन–देन सदैव समान होता है।'' ''अगर कोई वस्तु की आवश्यकता न होने पर भी उसे अपने पास रखता है तो वह चोरी है।'' गाँधीजी चाहते थे कि मानव जाति प्रत्येक वस्तु की संरक्षक के रूप में कार्य करे। गाँधीजी स्वच्छता साफ–सफाई और स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक थे। उनके अनुसार ''जो व्यक्ति लापरवाही से यहाँ–वहाँ थूककर, कूड़ा–करकट फेंककर था किसी अन्य रूप में जमींन को गन्दा करके वायु को दूषित करता है। वह मनुष्य और प्रकृति के प्रति पाप करता है'' उनके अनुसार एक आदर्श गांव वह है जो स्वयं सम्पूर्ण साफ–सफाई का ध्यान रखता है। इसमें ऐसे झोपड़ियाँ होनी चाहिए जो अपने 5 मील वर्ग परिधि में मिलने वाली सामग्री से बनी होंगी और इनमें पर्याप्त रोशनी व खिड़कियां होनी चाहिए।

यद्यपि गाँधीजी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्य में व्यस्त रहते थे फिर भी उन्होंने एक रद्दी का कागज, पानी का एक बूँद, गेहूँ के एक दाने की तथा एक मिनट बर्बादी की भी आज्ञा नहीं दी। वर्तमान में सर्वत्र विकास के नये प्रतिमान जिनमें, भौतिक, वैज्ञानिक व तकनीकि पहलू स्थापित हो चुके हैं इसके अलावा विकास की गति दिन व दिन बढ़ती ही जा रही है। यह प्रगति निश्चित रूप से अत्यंत सराहनीय व महत्वपूर्ण भी है परन्तु साथ ही जब हम अन्य मानवीय पक्षों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट दिखता है कि इन तमाम भौतिक उपलब्धियों व तकनीकि प्रगतियों के बीच मानवीय मूल्यों का अत्यधिक ह्रास हुआ है आज विश्व में बढ़ते आतंकवाद, जातीय व सांप्रदायिक हिंसा, धनी व गरीब देशों के बीच बढ़ती खांई, छोटे राष्ट्रों की सम्प्रभुता को आसन्न खतरे, स्त्री–पुरूष विभेद, पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यद्यपि हमने भौतिक विकास के क्षेत्र में नइ ऊँचाईयों को प्राप्त किया है परन्तु हम एक समग्र मानवीय विकास, जिन्हें मानवीय मूल्यों के विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। पर्यावरणीय संकट एवं इससे उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों से निपटने के लिए आज वर्तमान समय में गाँधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

प्रस्तुत विषयवस्तु पर शोध एवं अध्ययन वर्तमान राजनीतिक जीवन के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतकों में गाँधी पहले ऐसे राजनीतिक चिंतक हैं, जिन्हें पर्यावरण के संकट की गम्भीरता की गहरी अनुभूति थी। गाँधी के सविनय अवज्ञा, अहिंसात्मक प्रतिरोध, अपील, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य जैसे राजनीतिक चिंतन एवं साधन पर्यावरण संतुलन के लिए महत्वपूर्ण नीति के रूप में उपयोगी हो सकते हैं। सुन्दरलाल बहुगुणा का चिपको आन्दोलन गाँधीवादी विचारों की पर्यावरणीय सुरक्षा की उद्घोषणा एवं प्रत्याभूति के सदृश्य है। गाँधी के राजनीतिक सिद्धान्त प्रकृति के प्रतिकूल किसी भी अवधारणा को अंगीकार नहीं करते हैं। गाँधी ने अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता को सर्वोच्च महत्ता प्रदान की थी। गाँधी स्वयं दलित बस्तियों में जाकर दलितों का मैला साफ करते थे तथा स्वयं स्वच्छता की प्रेरणा देते थे।

गाँधीवादी अवधारणा मनुष्य को मशीन मानने की संकल्पना के प्रतिकूल थी। गाँधीवादी विचारों में मनुष्य को एक मानवीय संसाधन मानते हुए श्रम की महत्ता पर अवधारित एक ऐसे राजनीतिक आर्थिक दर्शन को अस्तित्व में लाना था, जिससे पर्यावरण पूरी तरह सुरक्षित रह सके। कुटीर उद्योग की अवधारणा पर्यावरण सुरक्षा का ब्रह्मास्त्र है। गाँधीवादी प्रयोग पर्यावरण की सुरक्षा को प्रत्याभूति देते हैं, फलतः गरीब व्यक्ति के जीवन स्तर को गाँधीवादी रास्ते से ही समृद्ध बनाया जा सकता है। ऐसा इसलिए कि पर्यावरण सुरक्षा को दृष्टिपथ में रखते हुए अर्थव्यवस्था का अभिकेन्द्र राज्य को बनाया जाएगा और ग्रामीण जनों को रोजगार उपलब्ध होगा तथा जीवन स्तर में अशातीत परिवर्तन होगा तो पर्यावरण भी पूर्ण रूप से अक्षुण्य बना रहेगा। गाँधी विनाशकारी हथियारों के वैश्विक कूटनीति के घनघोर विरोधी थे क्योंकि सम्पूर्ण अहिंसा का नाम गाँधी है। नागासाकी और हिरोशिमा की त्रासदी विनाशकारी हथियारों के कूटनीति का भयावह स्वरूप है। विश्व की राजनीति, नागासाकी एवं हिरोशिमा पुनरावृत्ति के पक्ष में नहीं है। आज विश्व में महाशक्तियों के पास विश्व की मानवता एवं विश्व के पर्यावरण को विनष्ट करने की शक्ति का अस्तित्व है। इस नाकारात्मक वैश्विक राजनीति का प्रतिरोध गाँधीवादी विचारों के माध्यम से ही संभव हो सकेगा। गाँधी का सम्पूर्ण वांग्मय और उनके विचार, प्रकृति के अत्यंत समीप है। उसका व्यवहारिक प्रवर्तन सहज, सरल एवं सम्भव है। उसकी संभाव्यकता का परिणाम भी लगभग निश्चित होता है। गाँधी के विचारों में जीवन की ऐसी सरलता, सहजता, सौम्यता तथा प्रकृति के प्रति समादर की भावना से युक्त है, जिसके माध्यम से पर्यावरण की विकृतियों से संघर्ष किया जा सकता है तथा समाधान के कई पक्षों को स्पर्श किया जा सकता है।

इस प्रकार स्वयं प्रकृति को महत्व देना पर्यावरण सम्बन्धी सबसे बुनियादी भावना है। 21वीं सदी में पर्यावरण सम्बन्धी गाँधीवादी विचार धारा जो सामाजिक न्याय, संसाधनों का समतामूलक उपयोग, साझी सम्पत्ति संसाधन के रूप में आज भी प्रासंगिक है। इस प्रकार बढ़ती पर्यावरणीय चुनौतियों की समस्या के समाधान में गाँधीवादी विचारधारा की महत्ता को शोध की विषयवस्तु रखा गया है।

सन्दर्भ

1. महात्मा गाँधी : 'हमारे गाँवों का पुनर्निर्माण, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, सन् 1948 पृ.9
2. महात्मा गाँधी : मेरे सपनों का भारत, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1960 पृ.15
3. महात्मा गाँधी : 'स्वराज्य का अर्थ', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, सन् 1996 पृ.56
4. महात्मा गाँधी : 'आत्मकथा (हिन्दी में)', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1956 पृ. 13–15
5. महात्मा गाँधी : 'हिन्दी–स्वराज', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, सन् 1958 पृ. 22–24
6. न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी : 'गाँधी विचार और पर्यावरण',

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2009 पृ.91
7. अमर्त्य सेन : 'आर्थिक विकास एवं स्वातंत्र्य', राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2008 पृ.101–105
8. महात्मा गाँधी : 'गांधी–वाणी', गांधी साहित्य प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, सन् 1939 पृ. 31
9. गांधीजी : सर्वोदय (रस्किन के अन टू दिस लास्ट का सारांश), सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1968 पृ. 42
10. गांधीजी : 'समग्र ग्राम सेवा', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1956 पृ.51
11. दादा धर्माधिकारी : 'दिशा बोधक दस्तावेज', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1950 पृ.22
12. जयप्रकाश नारायण : 'समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र', बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, सन् 1988 पृ.17
13. विनोबा भावे : 'अहिंसक समाजवाद की ओर', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1955 पृ. 91–93
14. कमल नयन काबरा : 'भूण्डलीकरण', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005 पृ. 27
15. सिद्धराज ढड्ढा : 'वैकल्पिक समाज–रचना', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1995 पृ.17
16. प्रो0 बी0एम0 शर्मा : 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.21
17. डी0एन0 चतुर्वेदी : 'लोकनीति मूलक अर्थव्यवस्था', लोक प्रकाशन गृह, वाराणसी, 1968 पृ.91
18. पंकज कुमार सिंह : 'समर्थ भारत', डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा0) लि0, नई दिल्ली, 2015 पृ.17